“Pt. Narad krut “Sangeet Makarand” Granth me varnit Taal evm Avanaddha Vaadhyo ka Samagralakshi Adhyayan”

“पं नारद कृत “संगीत मकरंद” ग्रंथ मे वर्णित ताल एवं अवनद्ध वाद्यों का समग्रलक्षी अध्ययन”

(SYNOPSIS)
(विषय-संक्षेप)
फ़ैकल्टी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स
द महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटि ऑफ बड़ौदा
पी.एच.डी (संगीत तबला) उपाधि के हेतु प्रस्तुत शोधसार

शोधछात्रा
अक्षिता बाजपेई

मार्गदर्शक (Guide)
प्रो० गौरांग भावसार

तबला विभाग
द महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटि ऑफ बड़ौदा
वर्ष 2019-2024

Registration Date: 20 March 2019
Registration No: FOPA/86

“पं नारद कृत “संगीत मकरंद” ग्रंथ मे वर्णित ताल एवं अवनद्ध वाद्यों का समग्रलक्षी अध्ययन”

<u>प्रस्तावना-</u> भारत सदियों से संस्कृति एवं संस्कारों के सन्दर्भ में विश्व का मार्गदर्शन करता रहा है, इसलिए भारत को विश्व गुरु कहा जाता था। भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय स्थापित थे, जहाँ विश्व के विद्यार्थी विभिन्न विषय के मार्गदर्शन हेतु आते थे। भारत सदियों से ज्ञान का स्तोत्र रहा है, भारत में युगों से प्रलेखन–आलेखन का कार्य होता रहा है। विभिन्न विषयों जैसे–मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, गणितशास्त्र, संगीतशास्त्र, विज्ञानशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र, तकनीकिशास्त्र, खगोलशास्त्र जैसे अनेक विषयों पर हस्तप्रत प्राप्त होती रही है, इसी बात को संज्ञान मे रखते हुए शोधछात्रा ने “**पं० नारद कृत “संगीत मकरंद“ ग्रन्थ में वर्णित ताल एवं अवनद्ध वाद्यों का समग्रलक्षी अध्ययन**” विषय पर शोध कार्य किया गया है। ‘संगीत मकरंद’ ग्रंथ में वर्णित ताल एवं अवनद्ध वाद्यों का वर्तमान परिपेक्ष में महत्त्व और उसके आधार बिन्दुओं को संकलित करके तथ्यों को विनम्र प्रयासो के साथ उजागर किया है। भारत के प्रचीन वेद, पुराण, महाकाव्य, उपनिषद्, ग्रंथ आदि संस्कृति के पथ को अग्रसित करते रहे है। इन्ही विशेषताओं से भारतीय संस्कृति विश्व पटल पर अपनी अनूठी छाप छोड़नें में सफल हुई है। शोधछात्रा संगीत के तबला विषय के साथ जुडी हुई है, शोधछात्रा मानती है की भारत में लिखे गये प्राचीन संगीत ग्रन्थ में संगीत की तीनों विद्या शाखायें गायन, वादन, नृत्य के सन्दर्भ में प्राचीन तथ्यों को सोचते हुए लेखन कार्य किया गया है। उसी ग्रंथों के आधार पर वर्तमान संगीत हमारे पास विद्यमान है। वैसे देखा जाये तो, प्रागैतिहासिक काल से पूर्व हमें संगीत ग्रंथों की प्राप्ति होती है, जिसमें भरतमुनि का नाट्यशास्त्र विशेष संगीत का उल्लेखनीय ग्रन्थ माना जाता है। वहीं से अवनद्ध वाद्यों ,तालों एवं संगीत के अनेक विषयों की धरा स्फुरित हुयी है। एतिहासिक दृष्टी से भारतीय काल गणना अनुसार कालो को तीन भागों में विभाजित किया गया है। इसी क्रम में अनेक ग्रंथों के माध्यम से हमें संगीत की विभिन्न जानकारी प्राप्त होती है, जिनमें नारदीय शिक्षा, बृहद्देशी, संगीत मकरंद, संगीतरत्नाकर, संगीत दर्पण, संगीत पारिजात, रस कौमुदी, संगीत समय सार, संगीत चूड़ामणि आदि महान ग्रंथो के नाम उल्लेखनीय है। ‘संगीत मकरंद’ ग्रन्थ के काल निर्धारण में अनेक मत मतांतर हमें प्राप्त होते है। यह एक अलग शोघ का विषय है फिर भी संगीत मकरंद 7वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य लिखा गया ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में मुख्यतः संगीताध्याय व नृत्याध्याय के अंतर्गत ताल ,ताल के दश प्राण एवं वाद्य विशेष के बारे में वर्णन किया गया है। ताल के दश प्राणों की चर्चा सर्वप्रथम ‘संगीत मकरंद’ के नृत्याध्याय में की गई है, जिसे तथ्यों के साथ अध्यायों मे प्रस्तुत किया गया है। एक बात यह भी है, कि कई विद्वान संगीत रत्नाकर से पहले संगीत मकरंद की रचना मानते है तो कई विद्वान इस ग्रन्थ को 17वीं शताब्दी में रचित मानते है क्योंकि समय-समय

पर मूल पाण्डुलिपि से पाठसंशोधन किया जाता था जिससे क्षतिग्रस्त पाण्डुलिपि से नवीन पाण्डुलिपि बना कर ग्रंथ मे मौजूद जानकारी को सुरक्षित रखा जा सके। कुछ विद्वानों का मानना है कि संगीत मकरंद की रचना नाट्यशास्त्र और संगीत रत्नाकर के मध्य हुई होगी किन्तु शोधछात्रा अध्ययन और अभ्यास के माध्यम से इस निष्कर्ष पर प्राप्त हुआ है कि संगीत मकरंद को 7वीं शताब्दी से 10वीं शताब्दी के मध्य मानना उचित होगा। विभिन्न तथ्यों को आत्मसात करते हुए संगीत मकरंद को 7वीं से 10वीं शताब्दी काल के प्रमुख ग्रन्थों मे से महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है।

<u>प्रस्तुत विषय पर शोध करने की आवश्यकता-</u> शोधछात्रा के तबला वाद्य से जुड़े होने के कारण इस विषय को गहराई से जानने की जिज्ञासा तथा नवीन तथ्यों को उजागर की इच्छा रखते हुए तथा मूल तत्वों से प्रेरित हो कर **"पं नारद कृत "संगीत मकरंद" ग्रन्थ में वर्णित ताल एवं अवनद्ध वाद्यों का समग्रलक्षी अध्ययन"** को अनुभूत किया है। संगीत मकरंद ग्रन्थ के काल निर्धारण में कई मत मतांतर पाये जाते है। यह विषय वस्तु की परिशुद्ध जानकारी शोध द्वारा निश्चित करने हेतु तथा संगीत मकरंद में वर्णित तालों का ताल के दश प्राणों एवं अवनद्ध वाद्यों का जो वर्णन पं० नारद जी द्वारा किया गया है उसे उनके पूर्ववर्ती व परवर्ती ग्रंथो के आधार पर प्रस्तुत करते हुए, तथा संगीत मकरंद में वर्णित तथ्यों के द्वारा उस समय वाद्यों एवं तालो की आवश्यकता किन आधारों पर थी इस जानकारी को एकत्रित किया गया है। संगीत मकरंद में वर्णित एकोत्तरशत ताल ,ताल के दश प्राण,ताल प्रबंध व अवनद्ध वाद्यों का वर्तमान स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। इन सभी तथ्यों को शोध विषय के अंतर्गत आवश्यकता अनुसार कार्य किया गया है। संगीत मकरंद के काल से सम्बंधित विभिन्न मतान्तरों की भी निश्चित जानकारी प्राप्त कराने और विषय की महत्ता को समझने का प्रयास करते हुए विषय के अन्य पहलुओ को प्रकट किया गया है। विभिन्न संगीतज्ञों द्वारा संगीत ग्रंथों में अवनद्ध वाद्यों व तालों के विकास की चर्चा की है तथा विभिन्न ग्रंथों में अवनद्ध वाद्यों और तालों से जुड़ी जानकारी प्रस्तुत की गयी है जैसे-वाद्यों की बनावट, वादन शैली तथा वाद्यों को किस विशेष अवसर पर बजाया जाता था, और कौन सी ताल का अधिक वादन किया जाता था आदि को आधारभूत तथ्यों के साथ रखा गया है। संगीत मकरंद में वर्णित अवनद्ध वाद्यों, तालों ,ताल प्रबंध व ताल के दश प्राणों के विषय मे जो नवीन तथ्य प्राप्त हुए है उन्हे प्रस्तुत किया गया है। इस शोधकार्य के माध्यम से संगीत जगत मे एक नयी विचारधारा संचारित होगी जो संगीत जगत की प्रत्येक विधा से जुड़े विद्यार्थियों संगीत के कलाकारों एवं समग्र संगीतज्ञों को लाभ व एक नवीन दृष्टिकोण संगीत के विद्यार्थियों को मिलेगा।

आकड़े एकत्र करने की विधि-

1. संगीत मकरंद की मूल पाण्डुलिपि का शोध पूर्ण रीति से अभ्यास किया गया है।

2. विषय सम्बन्धित वर्तमान नृत्य एवं संगीत के कलाकारों से विभिन्न तथ्यों पर चर्चा की गयी है।

3. विभिन्न प्राच्य विद्या मन्दिर, संस्कृत ग्रंथालयों में जाकर संगीत मकरंद संबन्धित विषय वस्तुओं का भी अभ्यास किया गया है।

4. प्राचीनकाल एवं वर्तमान में लिखी संगीत मकरंद संदर्भित पुस्तकों का अध्यन किया गया है।

5. आधुनिक उपलब्ध सुविधा व इंटरनेट के माध्यम से भी दत्तसामग्री को एकत्र किया गया है।

6. संगीत कला विहार, संगीत मैगजीन जैसे संगीत के मान्यता प्राप्त पत्रिकाओं में प्रकाशित विविध संगीत मकरंद संदर्भित शोध लेखो का भी अध्ययन किया गया है। इसके अलावा अन्य शोध पत्रिकाओं एंव सेमिनार में प्रस्तुत हुए शोध पत्रों के प्रोसीडींग का भी अवश्यकतानुसार अध्ययन किया गया है।

7. विविध सेमिनार, कांन्फरेन्स मे शोधार्थी द्वारा भाग लिया गया है, वहाँ उपस्थित संगीत विशेषज्ञों से भी साक्षातकार द्वारा प्राप्त संगीत मकरंद संबंधित तथ्यों को भी उजागर किया गया है।

पुनरावलोकन-

शोधार्थी द्वारा यह प्रयास किया गया है, कि जहाँ-जहाँ से भी संगीत मकरंद सम्बन्धी जानकारी प्राप्त हुई, उन सभी को एकत्र किया और उस उपलब्ध दत्त सामग्री को उसकी उपयोगिता के अनुसार शोधार्थी द्वारा शोध प्रबंध मे स्थान दिया गया है।

शोध पद्धति एवं योजना-

प्रस्तुत विषय के सम्बन्धित जो तथ्य प्राप्त हुए है, उनके अनुसार इस शोधकार्य को अधिक से अधिक पुनरावृत्ति से बचने का प्रयास किया गया है और सम्बन्धित विषय में संगीत मकरंद के ताल शास्त्र व अवनद्ध वाद्य की दृष्टि से कार्य प्राप्त नहीं होता है। जो इस कार्य के महत्त्व को प्रस्तुत करता है और साथ ही इस कार्य की वस्तुनिष्ठता को भी व्यक्त करता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में तथ्यों को विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक कार्य पद्धति के द्वारा प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि संगीत मकरंद एक अति प्राचीन काल का ग्रन्थ है,जिस कारण इसके शोध के लिए ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग किया गया है, और संगीत का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ होने के कारण इसका विश्लेषणात्मक अध्ययन इसके नवीन तथ्यों को उजागर करने के उद्देश्य से किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध की भाषा को किलिष्ट न बना कर सरल तथा सुलभ बनाने का प्रयास किया गया है, एंव वर्तमान शोध प्रविधि के अनुसार शोध कार्य को प्रस्तुत किया गया है।

<u>उद्देश्य</u>- शोध का मुख्य उद्देश्य विषय की उपादेयता को सिद्ध करना था जो कि तथ्यों के आधार पर शोधछात्रा को ज्ञात हुआ है उसे प्रस्तुत किया गया है। संगीत मकरंद पर अभी तक शोध कार्य नहीं किया गया था शोधछात्रा का यह विचार है की संगीत मकरंद एक ऐसा ग्रंथ है जिसमे लुप्तप्राय अनेक विषय थे जिसे सिर्फ शोध के माध्यम से ही प्रस्तुत किया जा सकता थे संगीत मकरंद संगीत की प्रत्येक विधा से संबन्धित ग्रंथ है इस ग्रन्थ मे गायन, वादन, नृत्य व नाट्य से संबंधित सभी विषयों को उजागर किया गया है, जिस प्रकार गणित तथा विज्ञान मे (सूत्र) अभियांत्रिक विषयों मे (coding-decoding) होती है उसी प्रकार संगीत के ग्रन्थों मे संस्कृत के श्लोको मे बंधी न जाने कितनी coding-decoding और सूत्र है जिन्हे शोध के माध्यम से ही हल किया जा सकता है। इस शोधकार्य के माध्यम से अवनद्ध वाद्यों व तालों की पूर्ण जानकारी संगीत से जुड़े प्रत्येक विद्यार्थी, शोधार्थी एवं संगीत के विवेचकों तक पहुँच कर उन्हें लाभान्वित कर सके यह इस शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य रहा है।

<u>अनुक्रमणिका</u>

अध्याय- **विषय वस्तु**

कृतज्ञता ज्ञापन

विषय प्रवेश

प्रथम अध्याय- **नारद का परिचय एवं काल निर्धारण**

1:1 पं० नारद का काल निर्धारण एवं परिचय

1:1:1 वैदिक साहित्य से वेदांगो मे नारद

1:1:1:1 ऋग्वेद

1:1:1:2 यर्जुवेद

1:1:1:3 अथर्ववेद

1:1:1:4 सामवेद

1:1:1:5 नारदीय शिक्षा

1:1:1:6 नारद भक्तिसूत्र

1:1:1:7 नारद पंचरत्न

1:1:1:8 स्मृति ग्रन्थों में नारद स्मृति

1:1:1:9 ज्योतिष शास्त्र में नारद

1:1:2 रामायण से महाभारत काल में नारद

1:1:2:1 बाल्मीकि रामायण में

1:1:2:2 महाभारत में महर्षि नारद

1:1:3 पुराणों से लौकिक साहित्य में नारद

1:1:3:1 ब्रह्म पुराण

1:1:3:2 स्कन्द पुराण

1:1:3:3 मत्स्य पुराण

1:1:3:4 अग्नि पुराण

1:1:3:5 भागवत पुराण

1:1:3:6 वारह पुराण

1:1:3:7 ब्रह्मावैवर्त पुराण

1:1:3:8 पद्म पुराण

1:1:3:9 नारद पुराण

1:1:3:10 लिंग पुराण

1:1:3:11 भविष्य पुराण

1:1:3:12 ब्राह्मण पुराण

1:1:3:13 वामन पुराण

1:2 पं० नारद कृत संगीत मकरंद के पूर्वचार्य एवं उनके ग्रन्थ

1:2:1 ब्रह्मा

1:2:2 शिव शंकर

1:2:3 स्वाति मुनि

1:2:4 नंदिकेश्वर अर्थात तंडु

1:2:5 तुंबुरु ऋषि

1:2:6 अश्मचुट्ट तथा नखकुट्ट

1:2:7 बादरायण तथा शातकर्णी

1:2:8 भरत कृत संगीत मकरंद

1:2:9 दत्तिल (दत्तिलम्)

1:2:10 मतंग (वृहददेशी)

1:2:11 कोहल (कोहलमतम्)

1:2:12 शार्दुल (हस्तभिनय)

1:2:13 नान्यदेव

1:2:14 कश्यप

1:3 पं० नारद कृत संगीत मकरंद के समकालीन आचार्य एवं उनके ग्रन्थ

1:3:1 यष्टिक

1:3:2 रुद्रट

1:4 पं० नारद कृत संगीत मकरंद के परवर्ती आचार्य एवं उनके ग्रन्थ

1:4:1 शारंग देव (संगीत रत्नाकर)

1:4:2 आचार्य पार्श्व देव (संगीत समय सार)

1:4:3 सुधा कलश (संगीतोपनिष्त्सारोद्धार)

1:4:4 शुभांकर (संगीत दामोदर)

1:4:5 संगीत पारिजात

1:4:6 पुंडरिक विट्ठल (नृत्य निर्णय)

1:4:7 श्री कंठ (रस कौमुदी)

प्रथम अध्याय- संगीत मकरंद देवर्षि नारद द्वारा रचित ग्रंथ है, जो कि अनेक विचारों का अध्ययन करके धार्मिक दृष्टी को समझते हुये, देवर्षि नारद के विषय मे कई मतभेद है, कि संगीत मकरंद के रचनाकार देवर्षि नारद कोई दूसरे नारद रहे होंगे या नारद नाम का कोई सम्प्रदाय रहा होगा, जो नारद के नाम से विचारों का प्रतिपादन करता होगा, किन्तु शोधछात्रा का विचार है, कि संगीत मकरंद के रचनाकार देवर्षि नारद वही नारद है, जिनकों सभी देवर्षि नारद, मुनि नारद, गन्धर्व नारद, ऋषि नारद, सिद्ध पुरुष नारद, ब्रह्मचारी नारद के रूप मे जानते है। संगीत मकरंद के रचनाकार पंडित नारद (देवर्षि नारद) के विषय मे विद्वानों के विभिन्न मत है। संगीत मकरंद के विषय मे तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि यह एक पाण्डुलिपि है, जिसके होने का सिद्ध प्रमाण गुजरात स्थित बड़ौदा की ''सेंट्रल लाइब्रेरी'' मे था, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि संगीत मकरंद कि पांडुलिपी वर्तमान मे (Oriental Institute of Baroda) प्राच्य विद्या मंदिर बड़ौदा मे है। शक संवत 1599 अर्थात् 1677 ई० मे 'कृष्णाजी दत्त' नाम के व्यक्ति द्वारा प्राचीन प्रतिलिपि से नवीन संशोधित प्रतिलिपि तैयार की गयी थी। इस पर विचार करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है, कि शक संवत 1599 अर्थात् 1677 ई० मे इसकी नवीन प्रतिलिपि तैयार करने के कारण ही कुछ विद्वान् संगीत मकरन्द को 16वीं, व 17वीं शताब्दी का ग्रन्थ मानने लगे। काल निर्णय निर्धारण की चर्चा करते हुये, संगीत मकरंद को

7वीं शताब्दी से 10वीं शताब्दी के मध्य मानना उचित होगा। विभिन्न तथ्यों को आत्मसात करते हुए संगीत मकरंद को 7वीं से 10वीं शताब्दी काल के प्रमुख ग्रन्थों मे से महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है।

द्वितीय अध्याय-संगीत मकरंद का अध्ययन

2:1 संगीत मकरंद ग्रन्थ की विवेचना

2:2 संगीत मकरंद के संगीताध्याय का अध्ययन

2:2:1 संगीताध्याय का प्रथम पाद –नाद के प्रकार

2:2:2 संगीताध्याय का द्वितीय पाद- गीतों का स्वरूप

2:2:3 संगीताध्याय का तृतीय पाद –रागों की परिभाषा

2:2:4 संगीताध्याय का चतुर्थ पाद-मृदंग व वीणा के लक्षण

2:3 संगीत मकरंद के नृत्याध्याय का अध्ययन

2:3:1 नृत्याध्याय का प्रथम पाद- नृत्य के लक्षण

2:3:2 नृत्याध्याय का द्वतीय पाद-तालो के लक्षण

2:3:3 नृत्याध्याय का तृतीय पाद- तालो के नाम पर विचार

2:3:4 नृत्याध्याय का चतुर्थ पाद- मृदंग एवं उसकी वादन कला

द्वितीय अध्याय नारद विरचित: संगीत मकरंद ग्रंथ को क्रमश: दो अध्याय संगीतध्याय व नृत्याध्याय तथा दोनों अध्यायों को चार-चार पाद जो इस प्रकार है-सङ्गीताध्याये प्रथम पाद, सङ्गीताध्याये द्वितीय पाद, सङ्गीताध्याये तृतीय पाद, सङ्गीताध्याये चतुर्थ पाद, नृत्याध्याये प्रथम पाद, नृत्याध्याये द्वितीय पाद, नृत्याध्याये तृतीय पाद, नृत्याध्याये चतुर्थ पाद मे विभाजित किया गया है। तत्पश्चात शोधार्थी तथा शोधार्थी के मार्गदर्शक व शोधार्थी के पिता द्वारा व संगीत अथवा संस्कृत के गुनिजनों के संगीत मकरंद मे वर्णित 560 श्लोको की व्याख्या का हिन्दी अनुवाद अन्वय व भावार्थ के साथ प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय संगीत मकरंद में वर्णित अवनद्ध वाद्यों का अध्ययन

3:1 संगीत मकरंद के पूर्ववर्ती ग्रंथो में वर्णित अवनद्ध वाद्यों का अध्ययन

3:1:1 ऋग्वेद

3:1:2 यजुर्वेद

3:1:3 अर्थववेद

3:1:4 महाभारत काल मे अवनद्ध वाद्यों का उल्लेख

3:1:5 संगीत मकरंद के अवनद्ध वाद्यों का उल्लेख

3:1:5:1 पणव

3:1:5:2 दर्दुर

3:1:5:3 मृदंग

3:1:5:4 पटह

3:1:5:5 झल्लरी

3:2 संगीत मकरंद में वर्णित अवनद्ध वाद्यों का अध्ययन

3:2:1 संगीत मकरंद में वर्णित अवनद्ध वाद्यों की अर्थ सहित व्याख्या

3:2:1:1 आलिङ्ग/आलिंग्यक

3:2:1:2 कटक

3:2:1:3 ढक्का

3:2:1:4 डमरूगा/डमरू

3:2:1:5 डिंडिमा

3:2:1:6 मड्डुक

3:2:1:7 झर्झर

3:3 संगीत मकरंद के परवर्ती ग्रंथो में वर्णित अवनद्ध वाद्यों का अध्ययन

3:3:1 सोमेश्वर देव कृत मानसोल्लास

3:3:2 नान्यदेव कृत सरस्वती हृदयलंकार (भरत भाष्यम)

3:3:3 शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर

3:3:3:1 पटह

3:3:3:2 मर्दल (मृदंग)

3:3:3:3 हुडुक्का

3:3:3:4 करटा

3:3:3:5 घट

3:3:3:6 घडस

3:3:3:7 ढवस

3:3:3:8 ढक्का

3:3:3:9 कुडुक्का

3:3:3:10 कुडुवा

3:3:3:11 रूंजा

3:3:3:12 डमरू

3:3:3:13 डक्का

3:3:3:14 मण्डिडक्का

3:3:3:15 डक्कुली

3:3:3:16 सेल्लुका

3:3:3:17 झल्लरी

3:3:3:18 भाण

3:3:3:19 त्रिवली

3:3:3:20 दुन्दुभि

3:3:3:21 भेरी

3:3:3:22 निःसाण

3:3:3:23 तुम्बकी

3:3:4 आचार्य पार्श्वदेव कृत संगीत समय सार

3:3:4:1 करडा

3:3:4:2 पटह

3:3:4:3 हुडुक्का

3:3:4:4 ढक्का

3:3:4:5 मृदंग

3:3:5 सुधाकलश कृत संगीतोपनिषद्सारोद्धार

3:3:6 राणा कुंभा कृत संगीत राज

3:4 संगीत मकरंद में वर्णित अवनद्ध वाद्यों की उपादेयता

तृतीय अध्याय- यह अध्याय संगीत मकरंद में वर्णित अवनद्ध वाद्यों से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा अवनद्ध वाद्यों से संबंधित सभी तथ्यों को समन्वित करते हुए संगीत मकरंद के पूर्ववर्ती व परवर्ती ग्रंथो ऋग्वेद, यजुर्वेद,अर्थववेद तथा महाभारत काल में वर्णित अवनद्ध वाद्यों का वर्णन किया गया है। देवर्षि नारद द्वारा रचित संगीत मकरंद ग्रंथ मे संगीत की सभी विधाओं पर

प्रकाश डाला गया है। संगीत मकरंद के प्रथम अध्याय संगीतध्याय के चतुर्थ पाद मे वाद्य विशेष के अंतर्गत वाद्यों का वर्णन प्राप्त होता है, जिसमे सुषिर व अवनद्ध वाद्यों का नाम इस प्रकार से दिये गए है। सुषिर वाद्यों मे शृङ्गं, कहला, मुखरिका, उडु, मन्द्रा, करणा आदि। अवनद्ध वाद्यों मे मृदङ्ग, ददुर्र, पणव, झर्झरी, पटह, आलिङ्ग, ढक्का, डमरुगा, मडु, झर्झर, डिण्डिमा, कटका। अवनद्ध वाद्यों की आलौकिकता अगम्य है अवनद्ध वाद्यों का क्रमिक विकास देखे तो अति प्राचीन काल से ही दुंदुभि, डमरू, ढक्का, इत्यादि वाद्य निर्मित हो चुके यह कि इनके विकास क्रम को झुठलाया नहीं जा सकता। प्रत्येक चरण पर पड़ाव आए परन्तु ऋषि मुनियों के अनुसंधान ने इस क्रम को नवीन दिशा प्रदान की स्वाति मुनि द्वारा पुष्कर वाद्यों कि कल्पना व निर्माण भारतीय अवनद्ध वाद्यों के लिए महानतम खोज है।

चतुर्थ अध्याय- संगीत मकरंद में वर्णित तालों का अध्ययन

4:1 संगीत मकरंद के पुर्ववर्ती ग्रंथो में वर्णित तालों का अध्ययन

4:1:1 भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र

4:1:2 आचार्य दत्तिल कृत दत्तलिम

4:1:3 मतंगमुनि कृत बृहद्देशी

4:2 संगीत मकरंद में वर्णित तालों का अध्ययन

4:2:1 संगीत मकरंद ग्रंथ के अनुसार तालों के नाम, चिन्ह व मात्रायें

4:3 संगीत मकरंद के परवर्ती ग्रंथो में वर्णित तालों का अध्ययन

4:3:1 सोमेश्वर कृत मानसोल्लास

4:3:2 संगीत चूड़ामणि प्रताप चक्रवर्ती (जगदेकमल)

4:3:3 पार्श्वदेव कृत सङ्गीतसमयसार

4:3:4 पंडित शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर

4:3:5 सुधाकलश कृत सङ्गीतोपनिषत्सारोद्धार

4:3:6 पुंडरिक विट्ठल कृत नृत्य निर्णय

4:4 संगीत मकरंद में वर्णित ताल प्रबंध का अध्ययन

4:4:1 त्रिभंगी

4:4:2 चतुर्मुख

4:4:3 पंच ताल प्रबंध

4:4:4 षट ताल प्रबंध

4:4:5 मार्तण्ड जयादा

4:4:6 अष्टमंगल

4:4:7 नव ताल प्रबंध

4:4:8 दश रूप प्रबंध

4:4:9 एकादश ताल प्रबन्ध

4:4:10 द्वादश ताल प्रबन्ध

4:5 संगीत मकरंद में वर्णित ताल के दश प्राणों का अध्ययन

4:5:1 काल

4:5:2 मार्ग

4:5:3 क्रिया

4:5:4 अंग

4:5:5 ग्रह

4:5:6 जाति

4:5:7 कला

4:5:8 लय

4:5:9 यति

4:5:10 प्रस्तार

4:6 संगीत मकरंद में वर्णित तालों की उपादेयता

चतुर्थ अध्याय- इस अध्याय के माध्यम से शोध छात्रा द्वारा पंडित नारद कृत संगीत मकरंद मे वर्णित एकोत्तरशत ताल, दस ताल प्रबंध व ताल के दश प्राण, के विषय में उपलब्ध माहिती व अध्ययन द्वारा प्राप्त सामाग्री से इस विषय को उजागर करने का प्रयास किया गया है। संगीत मकरंद ग्रंथ मे समान नाम वाले दशविधताल प्रबंधों का उल्लेख, बृहददेशी व मध्य काल के कुछ संगीत ग्रंथ जैसे 'संगीत रत्नाकर' व अन्य संगीत ग्रन्थों मे भी किया गया है। ताल के दस प्राणों में काल, मार्ग, क्रिया अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति, प्रस्तार का विस्तार पूर्वक विवरण प्राप्त होता है। पंडित नारद कृत संगीत मकरंद में वर्णित एकोत्तरशत ताल, दस ताल प्रबंध व ताल के दश प्राण से जुड़े प्रत्येक तथ्यो का आधार मानते हुये इस अध्याय का कार्य पूर्ण किया गया है।

<u>उपसंहार-</u> प्रस्तुत अध्याय के अंतरगर्त सभी पांचों अध्यायों का सार व निष्कर्ष को समाहित किया गया है। समस्त अध्यायों ब उनके उपअध्यायों का भी सार प्रस्तुत किया गया है। प्रथम अध्याय मे पं० नारद का काल निर्धारण एवं परिचय के साथ संबन्धित सभी विषयों को बताने का प्रयास किया गया है। द्वितीय अध्याय मे संगीत मकरंद ग्रन्थ की विवेचना करते हुए समस्त अध्यायों का परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। तृतीय अध्याय के अंतरगर्त समस्त संगीत मकरंद में वर्णित अवनद्ध वाद्यों सेसंबन्धित सभी विषयों को बताने का प्रयास किया गया है। अंतिम अध्याय मे संगीत मकरंद में वर्णित समस्त तालों से संबन्धित सभी विषयों व संगीत मकरंद में वर्णित तालों की उपादेयता को बताने का प्रयास किया गया है और इन सभी अध्यायों का एक पूर्ण निष्कर्ष पंचम अध्याय मे उपसंहार के अंतरगर्त प्रस्तुत किया गया है।

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची</u>

1. अथर्ववेद/दयानन्द संस्थान/नई दिल्ली
2. प्रश्नोपनिषद्/गीता प्रेस/गोरखपुर/प्रथम संस्करण 1992
3. अनुवाद शुक्ल शास्त्रीबाबूलाल/भरतमुनिप्रणीत नाट्यशास्त्र/चौखम्बा संस्कृत संस्थान उत्तर प्रदेश, वाराणसी/संस्करण 2012
4. नारद विरचित/ संगीत मकरंद/ओरिएंटल इंस्टीट्यूट ऑफ बड़ौदा (गुजरात)
5. सम्पादक गर्ग लक्ष्मी नारायण/पं० नारद कृत संगीत मकरंद/संगीत कार्यालय हाथरस
6. व्याख्या और अनुवादकर्त्री चौधरी सुभद्रा/शारंगदेवकृत संगीतरत्नाकर/राधापब्लिकेशन नई दिल्ली/प्रथम भाग/ संस्करण 2000
7. मिश्रा डॉ. सत्यदेव/अमरसिंह कृत अमरकोश/ शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय/भारत सरकार के सहयोग से प्रकाशित/संस्करण 1972
8. संपादक त्रिपाठी कामताप्रसाद/संगीतसूर्योदय/प्रकाशक इंदिरा कला संगीतविश्वविद्यालय/खैरागढ़ संस्करण 1986.
9. त्रिपाठी राधा बल्लभ नाट्यशास्त्र विश्व कोश भाग एक व दो न्यू भारती बुक कार्पोरेशन 208 द्वितीय तल, 4735/22 प्रकाशदीप भवन, अन्सारी रोड दरिया गंज, नई दिल्ली-110002
10. वेलंकर पंडित डी. के/ संगीतचूड़ामणि/ओरिएन्टल इंस्टिट्यूट/बड़ौदा/ संस्करण1958.
11. आचार्य डॉ. हरिराम/शुभंकरविरचित संगीतदामोदर/ पब्लिकेशन स्कीम/ जयपुर, संस्करण 1998
12. गजपति नारायणदेव/संगीतनारायण/ओडिशा संगीत नाटक अकादमी भुवनेश्वर/ संस्करण 1966

13. सम्पादन-अनुवाद आचार्य बृहस्पति/पार्श्वनाथकृत संगीत समयसार/भारतीय ज्ञानपीठ नयी दिल्ली/द्वितीय संस्करण 2009.

14. जगदेकमल कृत/संगीत चूड़ामणि/ओरिएंटल इंस्टीट्यूट ऑफ बड़ौदा (गुजरात)

15. वार्चनाचार्य सुधाकलश विरचित/संगीतोपनिषधसारोद्धार/ओरिएंटल इंस्टीट्यूट ऑफ बड़ौदा गुजरात

16. अभिनव गुप्त/अभिनव भारती टीका- नाट्यशास्त्र/प्राच्य विद्या मंदिर ओरिएंटल इंस्टीट्यूट ऑफ बड़ौदा (गुजरात) 2003.

17. सोमेश्वर कृत/मानसोल्लास/द्वितीय भाग/ओरिएंटल इंस्टीट्यूट ऑफ बड़ौदा (गुजरात)

18. पटेल, जमुना प्रसाद/ ताल वाद्य परिचय/ कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स/ 4697/5-21 ए. अंसारी रोड/ दरियागंज, नई दिल्ली-110002

19. कुदेशिया शोभा प्राचीन ताल के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान तबला वादन राधा पब्लिकेशन 4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

20. दाधीच, डॉ० पुरू/अष्टोत्तर शतताल लक्षणम्/ विन्दु प्रकाशन/ जी-6, अयोध्या अपार्टमेन्ट/ मनोरमागंज, इंदौर- म. प्र.

इस प्रकार संदर्भ ग्रंथ सूची प्रस्तुत की गयी है । जिससे इस कार्य की वस्तुनिष्ठता को प्रमाणित किया जा सके।